

# सामाजिक संरक्षण और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंधों का विश्लेषण

गौरव कुमार <sup>1\*</sup>, डॉ. गुलरेज खान <sup>2</sup>

1. रिसर्च स्कॉलर, श्री कृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, म.प्र., भारत  
gauravpandeycdl@gmail.com ,
2. सह - प्राध्यापक, श्री कृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, म.प्र., भारत

**सारांश:** अध्ययन ने सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए समावेशी शहरी नीतियों और विचारशील डिजाइन के महत्व पर बल दिया, यह सुझाव देते हुए कि जानबूझकर योजना बनाने से लचीले और सहायक शहरी समुदायों का निर्माण हो सकता है, अंततः निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। सिद्धांत में अद्वितीय योगदान, सामाजिक पूंजी सिद्धांत, सिस्टम सिद्धांत और सामाजिक नेटवर्क सिद्धांत का उपयोग सामुदायिक सामाजिक नेटवर्क और समर्थन प्रणालियों पर शहरीकरण के प्रभाव पर भविष्य के अध्ययनों को लंगर डालने के लिए किया जा सकता है।

**मुख्य शब्द:** सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक सामंजस्य, नकद हस्तांतरण, सार्वजनिक कार्य

----- X -----

## परिचय

शहरीकरण आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों का समग्र प्रतिबिंब है। औद्योगिक और कृषि क्षेत्र में तेजी से विकास, नए शहरों का उदय और पुराने शहरों का विकास, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों और छोटे शहरों से बड़े शहरों की ओर लोगों की आवाजाही के परिणामस्वरूप भारत परिवर्तन के प्रवाह में है। ये सभी समाज के सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय ढांचे के मौजूदा पैटर्न में और बदलाव लाते हैं। इस खंड में, वैश्विक, विकासशील, एशियाई, भारतीय और केरल संदर्भों में शहरीकरण के रुझानों और रणनीतियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। यह शहरीकरण और शहरी विकास के संदर्भ में विकसित और विकासशील देशों के बीच समानताओं, अंतरों की जांच करने का भी प्रयास करता है। अध्ययन को उचित तरीके से प्रस्तुत करने के लिए, शहरीकरण की अवधारणा और इसमें शामिल विभिन्न प्रक्रियाओं का विश्लेषण करना सार्थक है।

शहरीकरण शब्द से आमतौर पर यह समझा जाता है कि जनगणना विभागों द्वारा अपने मानदंडों के आधार पर शहरी क्षेत्र या बस्तियों में रहने वाली कुल आबादी का अनुपात बढ़ रहा है। शहरीकरण से जनसंख्या के व्यवहार का पैटर्न भी व्यक्त होता है, विनिर्माण, व्यापार, वाणिज्य और सेवा जैसे गैर कृषि कार्यों का विकास होता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन को प्रेरित करता है और नवाचार और प्रौद्योगिकी के प्रसार के लिए माहौल बनाता है। यह मानव बस्तियों और जीवन शैली की प्रक्रिया भी है। शहरीकरण में उनकी सोच और व्यवहार में बुनियादी बदलाव भी शामिल हैं और सामाजिक मूल्यों में भी बदलाव आता है। शहरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया को भी संदर्भित करता है, जिसमें पूरी आबादी का बढ़ता अनुपात शहरों और शहरों के उपनगरों में रहता है। ऐतिहासिक रूप से, यह औद्योगिकीकरण के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। जब मानव उत्पादकता (औद्योगिकीकरण) को बढ़ाने के लिए ऊर्जा के अधिक से अधिक निर्जीव स्रोतों का उपयोग किया गया

शहरीकरण शब्द से आम तौर पर यह समझा जाता है कि जनगणना विभागों द्वारा अपने मानदंडों के आधार पर परिभाषित शहरी क्षेत्रों या बस्तियों में रहने वाली आबादी में वृद्धि हुई है। विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपने-अपने विषयों से संबंधित विभिन्न कोणों से शहरीकरण की घटना और इसके प्रभावों का अध्ययन करने की कोशिश की है और अलग-अलग अर्थ दिए हैं। जनसांख्यिकीय अर्थ में शहरीकरण एक समय अवधि में कुल आबादी (टी) में शहरी आबादी (यू) के अनुपात में वृद्धि है। जब तक यू/टी बढ़ता है, तब तक शहरीकरण होता है। शहरीकरण को केवल शहरी बस्तियों में रहने वाली आबादी में वृद्धि के रूप में मानना एक अति सरलीकरण है और ऐसे क्षेत्रों में हेरफेर को आमतौर पर जनसांख्यिकीविदों द्वारा व्याख्यायित किया जाता है।

## साहित्य की समीक्षा

**खंबुले, इसहाक. (2014).** यह लेख दक्षिण अफ्रीका में स्थानीय स्तर पर सामाजिक संवाद के संस्थागतकरण के लिए एक तर्क प्रस्तुत करता है ताकि प्रभावी निजी-सार्वजनिक भागीदारी को बढ़ावा दिया जा सके। यह दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है कि सामाजिक संवाद भागीदारी भागीदारी का तंत्र है, जो सामान्य विकासात्मक उद्देश्यों के सिद्धांतों के साथ-साथ संयुक्त समस्या-समाधान और निर्णय लेने के कारण है। इस तरह, सामाजिक संवाद का संस्थागतकरण LED के लिए संस्थागत व्यवस्था को मजबूत कर सकता है। यह पत्र घाना और नेपाल के केस स्टडीज का उपयोग करके दिखाएगा कि कैसे अनौपचारिक क्षेत्र में आर्थिक अवसरों का सामाजिक संवाद के संस्थागतकरण के माध्यम से लाभ उठाया गया। यह उन विभिन्न तरीकों पर भी नज़र डालता है जिनसे अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन स्थानीय स्तर पर असामाजिक संवाद के नज़रिए से LED मामलों को बढ़ावा देता है। चूँकि सामंजस्य की प्रक्रिया में सभी हितधारक महत्वपूर्ण हैं, इसलिए समावेशी सामाजिक संवाद के संस्थागतकरण के माध्यम से समान आर्थिक विकास और सामाजिक सामंजस्य प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा, यह पत्र बताता है कि सामाजिक संवाद LED मामलों पर अधिक आलोचनात्मक सोच और जुड़ाव को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है, और LED संस्थानों और उनके विभिन्न हितधारकों के कार्यान्वयन को मजबूत करने और उनके अभ्यास की देखरेख करने की दिशा में भी एक लंबा रास्ता तय कर सकता है।

**बैंडिले, एंडी. (2023)**। इस अध्ययन का सामान्य उद्देश्य सामुदायिक सामाजिक नेटवर्क और सहायता प्रणालियों पर शहरीकरण के प्रभाव की जांच करना था। कार्यप्रणाली: अध्ययन ने एक डेस्कटॉप शोध पद्धति को अपनाया। डेस्क रिसर्च माध्यमिक डेटा या वह डेटा है जिसे फील्डवर्क के बिना एकत्र किया जा सकता है। डेस्क रिसर्च मूल रूप से मौजूदा संसाधनों से डेटा एकत्र करने में शामिल है, इसलिए इसे अक्सर फील्ड रिसर्च की तुलना में कम लागत वाली तकनीक माना जाता है, क्योंकि मुख्य लागत कार्यकारी के समय, टेलीफोन शुल्क और निर्देशिकाओं में शामिल होती है। इस प्रकार, अध्ययन पहले से प्रकाशित अध्ययनों, रिपोर्टों और आँकड़ों पर निर्भर था। यह द्वितीयक डेटा ऑनलाइन पत्रिकाओं और पुस्तकालय के माध्यम से आसानी से उपलब्ध था। निष्कर्ष: निष्कर्ष बताते हैं कि सामुदायिक सामाजिक नेटवर्क और सहायता प्रणालियों पर शहरीकरण के प्रभाव से संबंधित एक प्रासंगिक और पद्धतिगत अंतर मौजूद है। प्रारंभिक अनुभवजन्य समीक्षा से पता चला कि शहरीकरण ने पारंपरिक सामाजिक नेटवर्क को काफी हद तक खंडित कर दिया है, जिससे अलगाव और अनौपचारिक सहायता प्रणालियों में कमी आई है। हालाँकि, इसने सरकारी सेवाओं, गैर सरकारी संगठनों और समुदाय-आधारित पहलों के माध्यम से औपचारिक सहायता तंत्र विकसित करने के अवसरों की भी पहचान की, जो प्रौद्योगिकी द्वारा बढ़ाए गए हैं। अध्ययन ने सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए समावेशी शहरी नीतियों और विचारशील डिजाइन के महत्व पर बल दिया, यह सुझाव देते हुए कि जानबूझकर योजना बनाने से लचीले और सहायक शहरी समुदायों का निर्माण हो सकता है, अंततः निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। सिद्धांत, व्यवहार और नीति में अद्वितीय योगदान: सामाजिक पूंजी सिद्धांत, सिस्टम सिद्धांत और सामाजिक नेटवर्क सिद्धांत का उपयोग सामुदायिक सामाजिक नेटवर्क और समर्थन प्रणालियों पर शहरीकरण के प्रभाव पर भविष्य के अध्ययनों को लंगर डालने के लिए किया जा सकता है। अध्ययन ने सामाजिक पूंजी, प्रणालियों और सामाजिक नेटवर्क सिद्धांतों को शहरी अध्ययनों में एकीकृत करने, सांप्रदायिक स्थानों के निर्माण को प्राथमिकता देने और सामाजिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए समुदाय-आधारित कार्यक्रमों को लागू करने की सिफारिश की। इसने सामाजिक बुनियादी ढांचे तक समान पहुंच सुनिश्चित करने, सांस्कृतिक प्रथाओं को संरक्षित करने और सामाजिक संपर्क और समर्थन सेवाओं को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने वाली नीतियों की वकालत की।

**मोलिना, ऑस्कर। (2022)**। यह वर्किंग पेपर ग्रीन कार्यस्थलों का समर्थन करने और अधिक सामान्य रूप से, उद्यम स्तर पर न्यायपूर्ण बदलावों को बढ़ावा देने में त्रिपक्षीय सामाजिक संवाद की भूमिका का विश्लेषण करता है। वर्किंग पेपर उन विभिन्न तंत्रों की खोज करता है जिनके द्वारा सामाजिक संवाद ने उपरोक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नीतियों और पहलों को नियंत्रित करने, बढ़ावा देने और लागू करने में योगदान दिया है, जिसमें राष्ट्रीय सामाजिक संवाद संस्थानों (NSDI) की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया गया है। ऐसा करते हुए, वर्किंग पेपर इन नीतियों और प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी के संबंध में सामाजिक भागीदारों के सामने आने वाली मुख्य चुनौतियों पर भी चर्चा करता है, जिसमें संस्थागत ढांचे द्वारा बनाए गए अवसर या बाधाएँ, आवश्यक तकनीकी क्षमताओं का प्रकार और सामाजिक संवाद के विभिन्न स्तरों के बीच अभिव्यक्ति शामिल हैं। अंत में, वर्किंग पेपर न्यायपूर्ण बदलावों को बनाए रखने और ग्रीन कार्यस्थलों का विस्तार करने के लिए एक उपकरण के रूप में सामाजिक संवाद

की भूमिका को बढ़ाने के लिए कुछ नीतिगत संकेत प्रदान करता है।

**दीप, गगन. (2023).** शहरी नियोजन में सामुदायिक सहभागिता का सतत विकास पर प्रभाव एक ऐसा विषय है जिसका महत्व बढ़ता जा रहा है क्योंकि शहर तेजी से हो रहे शहरीकरण की चुनौतियों से जूझ रहे हैं। यह अध्ययन नियोजन प्रक्रिया में सामुदायिक सहभागिता और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के बीच बहुआयामी संबंधों पर गहराई से विचार करता है। केस स्टडी की जांच करके और भागीदारी पहलों के परिणामों का आकलन करके, शोध का उद्देश्य शहरी वातावरण को आकार देने में सामुदायिक सहभागिता की प्रभावशीलता और निहितार्थों पर प्रकाश डालना है जो सामाजिक रूप से समावेशी और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ दोनों हैं।

**एंथनी जूनियर, बोकोलो। (2023)।** स्मार्ट शहरों में सबसे हालिया विषयों में से एक सामुदायिक जुड़ाव है, जिस पर आम तौर पर शहरी वातावरण में इस्तेमाल किए जाने वाले तरीकों और उपकरणों के बारे में औद्योगिक और शैक्षणिक साहित्य दोनों में विचार-विमर्श किया गया है। तदनुसार, इस अध्ययन का उद्देश्य सामुदायिक जुड़ाव को एक प्रमुख चालक के रूप में वकालत करना है जो सामाजिक स्थिरता के लिए एक न्यायसंगत समुदाय को प्राप्त करने की दिशा में नवाचार और रचनात्मकता के लिए आवश्यक ज्ञान और आवश्यकताओं के अधिग्रहण का समर्थन करता है। वेब ऑफ साइंस और स्कोपस डेटाबेस से 71 स्रोतों का विश्लेषण करने के लिए एक अर्ध-व्यवस्थित समीक्षा पद्धति को अपनाया गया है। कथात्मक और वर्णनात्मक विश्लेषण प्रदान करने के लिए साहित्य से द्वितीयक डेटा निकाला और संश्लेषित किया जाता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष एक विकसित मॉडल प्रस्तुत करते हैं जो स्मार्ट संधारणीय शहर के विकास के लिए सामुदायिक जुड़ाव को प्रभावित करने वाले कारकों को निर्दिष्ट करके शहरी नवाचार के लिए सामुदायिक जुड़ाव का समर्थन कर सकता है। यह मॉडल शहरी वातावरण में नागरिकों, नीति निर्माताओं, सरकार, शहरी योजनाकारों, शिक्षाविदों और उद्यमों को नवीन सेवाओं से जुड़ने, बातचीत करने, जुड़ने और सह-निर्माण करने में सक्षम बनाता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस शोध के निष्कर्ष स्मार्ट संधारणीय शहरों के लिए शहरी सेवाओं के सह-निर्माण में प्रशासनिक और गैर-प्रशासनिक हितधारकों की भागीदारी पर सैद्धांतिक साक्ष्य प्रदान करते हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन इस बात पर सुझाव देता है कि विभिन्न हितधारकों को शामिल करने वाला सामुदायिक जुड़ाव परिप्रेक्ष्य किस तरह संधारणीय विकास का समर्थन करके और अंततः एक सामाजिक रूप से समावेशी शहरी स्थान को साकार करके लचीले तकनीकी संचालित शहर को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

## अनुसंधान क्रियाविधि

शोध तकनीक जो “शहरीकरण के परिणाम पर सामाजिक वार्ता और समुदाय समाहित का प्रभाव एक तेजी से बढ़ते शहर का एक मामूली अध्ययन” की जांच में उपयुक्त किया गया था, उसमें डेटा को संग्रह, मूल्यांकन, और व्याख्या करने के लिए एक वैधानिक प्रक्रिया का उपयोग किया गया था ताकि इन घटकों के बीच मौजूद जटिल जुड़ाव की समझ मिल सके। इस महत्वपूर्ण विषय को पूरी तरह से समझने के लिए, इस शोध दृष्टिकोन में गुणरहित और गणनात्मक शोध प्रक्रियाओं का मिश्रण करता है। शोध दृष्टिकोन की सारांश निम्नलिखित रूप में पाया जा सकता है;

मामूली दृष्टिकोन में: किसी विशेष संदर्भ में शहरीकरण, सामाजिक अंतर्वार्ता, और समुदाय समाहित की गतिविधियों की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए, आपको अपने शोध को एक ऐसे शहर पर केंद्रित करना चाहिए जो तेजी से बढ़ती जनसंख्या की वृद्धि का सामना कर रहा है।

## सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंध

यह अध्याय मौजूदा साहित्य के आधार पर प्रमुख शब्दों को परिभाषित करता है और सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक सामंजस्य के बीच

सैद्धांतिक संबंध का वर्णन करता है। यह सामाजिक सामंजस्य के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं का वर्णन करता है, और बताता है कि सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम सैद्धांतिक रूप से इनमें से प्रत्येक को कैसे प्रभावित कर सकते हैं। हालाँकि सामाजिक सुरक्षा के सामाजिक सामंजस्य पर पड़ने वाले प्रभावों पर विशेष रूप से बहुत सीमित शोध हुआ है, लेकिन अब तक सामाजिक सुरक्षा के प्रभावों पर बहुत बड़ा साहित्य उपलब्ध है। यह साहित्य सामाजिक सामंजस्य के कई घटकों को भी कवर करता है।

### सामाजिक सुरक्षा

सामाजिक सुरक्षा की कोई एक विशिष्ट परिभाषा नहीं है। कुछ परिभाषाएँ बहुत व्यापक हैं, उदाहरण के लिए DFID की सामाजिक सुरक्षा की परिभाषा 'सार्वजनिक कार्यों का एक उप-समूह जो जोखिम, भेद्यता और पुरानी गरीबी को दूर करने में मदद करता है'। हालाँकि, सामाजिक सुरक्षा को आम तौर पर अधिक संकीर्ण रूप से भी परिभाषित किया जाता है, और इस रिपोर्ट के उद्देश्य के लिए हम इसे 'घरों या व्यक्तियों को भुगतान किए जाने वाले नियमित हस्तांतरण, वस्तु के रूप में या नकद' के रूप में परिभाषित करते हैं। इस परिभाषा में उदाहरण के लिए सार्वजनिक कार्य कार्यक्रम, वृद्धावस्था पेंशन, बाल लाभ और सशर्त नकद हस्तांतरण शामिल हैं, लेकिन स्वास्थ्य क्षेत्र की नीति को शामिल नहीं किया गया है। सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों में दो मुख्य श्रेणियाँ शामिल हैं: अंशदायी (सामाजिक बीमा) और गैर-अंशदायी कार्यक्रम। इस रिपोर्ट के उद्देश्य के लिए, हम केवल गैर-अंशदायी कार्यक्रमों पर विचार करते हैं।

### सामाजिक सामंजस्य

सामाजिक सामंजस्य को 'एक ऐसा गोंद बताया गया है जो समाज को एक साथ रखता है और इसके सदस्यों को शांतिपूर्ण ढंग से सह-अस्तित्व और विकास करने में सक्षम बनाता है' (यूएनडीपी और एससीजी 2015)। एक सटीक सार्वभौमिक परिभाषा पर पहुंचना मुश्किल साबित हुआ है, और संस्थाओं और देशों के बीच परिभाषाएं अलग-अलग हैं। हालांकि, अधिकांश परिभाषाएं किसी न किसी तरह से सामाजिक संबंधों की गुणवत्ता और लोगों की धारणाओं और एक साथ होने की भावनाओं को संदर्भित करती हैं। उदाहरण के लिए, UNDESA के अनुसार, 'एक सुसंगत समाज वह है जहाँ सभी समूहों में अपनेपन, भागीदारी, मान्यता और वैधता की भावना होती है' (UNDESA, nd) अंतरराष्ट्रीय शांति-निर्माण NGO सर्च फॉर कॉमन ग्राउंड सामाजिक सामंजस्य को चार प्रमुख घटकों के रूप में देखता है: 1) सामाजिक संबंध, 2) जुड़ाव, 3) आम अच्छे के प्रति अभिविन्यास और 4) समानता। इसलिए सामाजिक सामंजस्य मुद्दों की एक विस्तृत शृंखला से जुड़ा हुआ है जो लोगों के एक-दूसरे और राज्य से संबंध बनाने के तरीके को प्रभावित करता है, जिसमें शासन, मानवाधिकार, सामाजिक उत्तरदायित्व, गरीबी, असमानता और सामाजिक बहिष्कार शामिल हैं। यह संघर्ष संवेदनशीलता की अवधारणा से इस अर्थ में जुड़ा हुआ है कि संघर्ष संवेदनशील प्रोग्रामिंग का अर्थ है ऐसी प्रोग्रामिंग जो सामाजिक सामंजस्य में योगदान देती है और संघर्ष को उत्पन्न या बढ़ाने से बचाती है।

सामाजिक सामंजस्य के संबंध में सामाजिक संबंधों के दो समूह महत्वपूर्ण हैं। 1) नागरिकों और राज्य के बीच संबंध। इसे कभी-कभी राज्य-समाज संबंध या सामाजिक अनुबंध के रूप में भी समझा जाता है, जिसे 'राज्य और समाज के बीच उनकी पारस्परिक भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर एक गतिशील समझौता' के रूप में परिभाषित किया जाता है (बाबाजैनियन, 2012)। सामाजिक अनुबंध राज्य से लोगों की अपेक्षाओं और सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं को प्रदान करने की राज्य की क्षमता और इच्छा को संदर्भित करता है। 2) नागरिकों के बीच संबंध। इसमें विभिन्न सामाजिक समूहों, समुदायों, परिवारों और व्यक्तिगत नागरिकों के बीच संबंध शामिल हैं। इसमें सामाजिक संबंध और संसाधनों का वितरण दोनों शामिल हैं।

सामाजिक सामंजस्य कई कारणों से महत्वपूर्ण है, जिसमें व्यक्तिगत कल्याण, बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति और सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच बढ़ाना शामिल है। यह आर्थिक विकास और अपराध और हिंसा को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए यह शांति और स्थिरता के कारणों को समझने के लिए भी एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। सामाजिक सामंजस्य राज्य निर्माण, राज्य वैधता और सुशासन के प्रयासों का भी आधार है। यह सरकारों को कुशल और न्यायसंगत सार्वजनिक नीति लागू करने की अनुमति देने के लिए महत्वपूर्ण है (बाबाजैनियन, 2012)।

## शांति स्थापना और राष्ट्रीय सुलह

शांति निर्माण एक व्यापक अवधारणा है जो समाज की सभी स्तरों पर हिंसा को रोकने की क्षमता में सुधार से संबंधित है। शांति निर्माण का उद्देश्य 'संघर्ष की गतिशीलता को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने, समाज की एकजुटता का समर्थन करने और नीचे से ऊपर तक स्थायी शांति बनाने के लिए सभी स्तरों पर राष्ट्रीय क्षमताओं को मजबूत करते हुए नकारात्मक संबंधों और संस्थानों को बदलना या रूपांतरित करना है' (यूएनडीपी और एससीजी, 2015)। राष्ट्रीय सुलह का उपयोग अक्सर राष्ट्रीय स्तर पर शांति निर्माण की प्रक्रिया को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। बड़ी हुई सामाजिक एकजुटता को सफल शांति निर्माण और राष्ट्रीय सुलह प्रयासों के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है।

## सामाजिक संरक्षण और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंधों का विश्लेषण

तथ्य यह है कि सामाजिक सामंजस्य एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है, जिसका अर्थ है कि सामाजिक सामंजस्य के अलग-अलग आयामों पर सामाजिक सुरक्षा के प्रभाव की जांच करना सबसे उपयुक्त है (बाबजानियन, 2012)। इस रिपोर्ट में विश्लेषण के लिए, हम सामाजिक सामंजस्य के विश्लेषण के लिए UNDP और सर्च फॉर कॉमन ग्राउंड द्वारा विकसित एक वैचारिक ढांचे का उपयोग करते हैं (UNDP और SCG, 2015)। इस ढांचे में सामाजिक सामंजस्य के निम्नलिखित आयाम शामिल हैं:

1. **राजनीतिक:** इसमें मतदान, भागीदारी, सरकार में विश्वास का स्तर शामिल है।
2. **सामाजिक** समूह के भीतर और अन्य समूहों में विश्वास का स्तर, अपनेपन की धारणा, सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी, सामाजिक समावेशन/बहिष्कार शामिल हैं।
3. **आर्थिक** इसमें सामाजिक गतिशीलता की धारणाएं, जीवन स्तर के प्रति संतुष्टि, बुनियादी सेवाओं तक पहुंच का स्तर, आर्थिक असमानता की धारणाएं शामिल हैं।

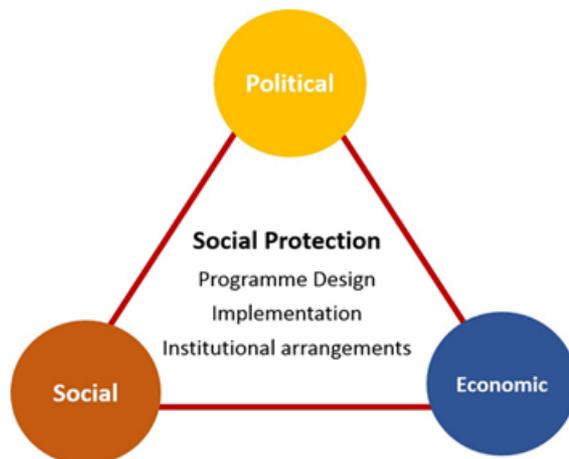
इस ढांचे में 'सांस्कृतिक' संकेतकों का चौथा आयाम भी शामिल है, जिसमें रूढ़िवादिता, पूर्वधारणाएं और पूर्वाग्रह, भेदभाव, अन्य समूहों के साथ संपर्क और समूहों के बीच संघर्षों को हल करने के तंत्र शामिल हैं। सरलता के लिए, हम इन संकेतकों को यहाँ सामाजिक आयाम के अंतर्गत शामिल करते हैं।

ये संकेतक इस बात के विस्तृत विश्लेषण का आधार बन सकते हैं कि सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम सामाजिक सामंजस्य के विभिन्न आयामों को कैसे और कब प्रभावित करते हैं। इसमें सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम के डिजाइन, कार्यान्वयन और संस्थागत व्यवस्थाओं के विभिन्न पहलुओं का प्रभाव शामिल है। इसके अलावा, राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ इस बात को प्रभावित करेंगे कि ये कारण तंत्र व्यवहार में कैसे काम करते हैं, विशेष रूप से नागरिकों के बीच और नागरिकों और राज्य के बीच स्थानीय शक्ति गतिशीलता।

प्रत्येक आयाम के लिए, सामाजिक सामंजस्य पर सामाजिक सुरक्षा के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए अलग-अलग सैद्धांतिक ढांचे प्रासंगिक हैं:

1. **राजनीतिक:** यह आयाम यह समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम सामाजिक सामंजस्य के राज्य-नागरिक संबंध पहलू को कैसे प्रभावित करते हैं। भूमिका निभाने वाले कारण तंत्र को समझने के लिए, हमारा विश्लेषण जवाबदेही (विशेष रूप से सामाजिक जवाबदेही), राज्य की वैधता और सामाजिक अनुबंधों के सिद्धांतों पर आधारित है।
2. **सामाजिक:** यह आयाम यह समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम नागरिकों के बीच संबंधों को कैसे प्रभावित करते हैं। हमारा विश्लेषण विशेष रूप से सामाजिक बहिष्कार और सामाजिक पूंजी के सैद्धांतिक ढाँचों पर आधारित है।
3. **आर्थिक:** यह आयाम यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि सामाजिक सुरक्षा गरीबी, भेद्यता, असमानता और असुरक्षा के माध्यम से

सामाजिक सामंजस्य को कैसे प्रभावित करती है। यहाँ हम विशेष रूप से गरीबी, भेद्यता और असमानता के चालकों और प्रभावों के सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।



चित्र 1: सामाजिक सामंजस्य के विभिन्न आयाम

## संदर्भ

1. बर्नस्टीन, अरला और इसहाक, कैरोला (2021)। जेंटीफिकेशन: सामुदायिक जुड़ाव और सामाजिक सामंजस्य में संवाद की भूमिका। जर्नल ऑफ अर्बन अफेयर्स। 45. 1-18. 10.1080/07352166.2021.1877550।
2. हमौद, साद और बसी, धीह और हुसैन, शाइमा। (2023)। सामाजिक गतिशीलता पर शहरी नियोजन का प्रभाव: बगदाद के सार्वजनिक स्थानों में स्थानिक रूप और लोगों का व्यवहार। वर्नक्यूलर सेटलमेंट के अध्ययन के लिए अंतर्राष्ट्रीय सोसायटी। 11. 319-334. 10.61275/ISVSej-2024-11-02-20.
3. ओहता, रयुइची और याकाबे, तोशीहिरो और अदाची, हिरोशी और सानो, चियाकी। (2024)। ग्रामीण जापानी समुदायों में सामुदायिक संवाद और अकेलेपन के बीच संबंध: एक क्वॉस-सेक्शनल अध्ययन। क्यूरियस। 16. 10.7759/cureus.57744।
4. चौधरी, रजनीश. (2019). सतत शहरीकरण और सामुदायिक सहभागिता. 10.1007/978-981-13-8530-8\_11.
5. सेतियावान, क्रिस्टीना और निंग्ट्यास, रहजू। (2023)। शहरी कल्याण और सामुदायिक विकास: निर्मित वातावरण, सामाजिक नेटवर्क और जीवन की गुणवत्ता के बीच संबंधों की जांच करना। वेस्ट साइंस सोशल एंड ह्यूमैनिटीज स्टडीज। 1. 53-62. 10.58812/wssh.v1i02.188।
6. एंथनी जूनियर, बोकोलो। (2023)। स्मार्ट सस्टेनेबल शहरों के सह-निर्माण की दिशा में शहरी नवाचार में सामुदायिक सहभागिता की भूमिका। जर्नल ऑफ द नॉलेज इकोनॉमी। 15. 10.1007/s13132-023-01176-1।
7. दीप, गगन. (2023). शहरी नियोजन में सामुदायिक सहभागिता के सतत विकास पर प्रभाव का मूल्यांकन. वर्ल्ड जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड रिव्यूज. 20. 1633-1338. 10.30574/wjarr.2023.20.3.2453.
8. मोलिना, ऑस्कर. (2022). न्यायपूर्ण परिवर्तन को सुगम बनाने में त्रिपक्षीय सामाजिक संवाद की भूमिका: चयनित देशों के अनुभव. 10.54394/MGBG9270.

9. बैडिले, एंडी. (2023). सामुदायिक सामाजिक नेटवर्क और सहायता प्रणालियों पर शहरीकरण का प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटी एंड सोशल साइंसेज. 3. 46-59. 10.47941/ijhss.2084.
10. खंबुले, इसहाक. (2014). सामाजिक संवाद को संस्थागत बनाना. कार्यस्थल पर कौशल: सिद्धांत और अभ्यास जर्नल. 7. 41-52.
11. Add Refrence here
12. Add Refrence here